इंडियन स्कूल सलालाह

बाल पत्रिका

हिंदी विभाग

आमुख

हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर बाल-पत्रिका का दूसरा संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है। हम विद्यालय प्रबंधक समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष डॉ. सैयद अहसन जमील का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हैं जो इस कार्य के प्रेरणास्रोत रहे। प्रबंधक समिति के अन्य सदस्यों, प्रधानाचार्य श्री दीपक पाठंकर एवं हिंदी विभाग के सभी शिक्षकों का भी इस महान कार्य में उनके अनुपम योगदान हेतु आभार व्यक्त करते हैं। आशा है यह बाल-पत्रिका छात्रों की सृजनात्मकता एवं मौलिकता को निखारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

एन. बालसुब्रमणियन

हिंदी विभागाध्यक्ष

गुरु का सहारा

मिले न गुरु का अगर सहारा

मिटे नहीं मन का अंधियारा।

सुंदर सुर सजाने को साज बनाते हैं

नौसिखिए परिंदों को बाज बनाते हैं।

चुपचाप सुनते हैं शिकायतें सबकी

तब दुनिया बदलने की आवाज़ बनाते हैं।

संमुदर तो परखता है हौसले कश्तियों के

और वे डूबती कश्तियों को जहाज़ बनाते हैं।

बनाए चाहे चाँद पर कोई भुर्ज खलीफ़ा

वे तो चंद्रयान बनाना सिखाते हैं।

रिहान अहमद

IX - A

मेरा देश

देश बंटा था जब टुकड़ों में,

पटेल ने किया था योगदान,

फिर हुआ अखंड़ सदा को,

मेरा भारत देश महान

भाषा बोली अलग-अलग हैं,

फिर भी सबका है सम्मान,

पूरब से लेकर पश्चिम तक,

सारा इक है हिंदुस्तान।

अनम

VII - A

माँ

सुकून है माँ, करार है माँ,
ज़माने भर का प्यार है माँ।
खोल के मन की आँखें देख,
सुनहरा-सा संसार है माँ।
हर जगह है द्वेष का मौसम,
घर में बसंत बहार है माँ।
सेवा करना कभी न भूलो,
स्वर्ग का पावन द्वार है माँ।
माँ का दिल कभी न दुखाना,
भगवान का रूप है माँ।
अकेली नहीं समझना इनको,
खुद पूरा परिवार है माँ।

इशान गर्ग
VII - B

पानी और धूप

अभी-अभी थी धूप

बरसने लगा कहाँ से यह पानी

किसके फोड़ घड़े बादलों ने

की है इतनी शैतानी।

सूरज ने क्यों बंद कर लिया

अपने घर का दरवाज़ा

उसकी माँ ने भी क्या उसको

बुला लिया कहकर आ जा।

ज़ोर-ज़ोर से गरज रहे हैं

बादल हैं किसके काका

किसको ड़ाँट रहे हैं, किसने

कहना नहीं सुना माँ का।

तशीन

VII-A

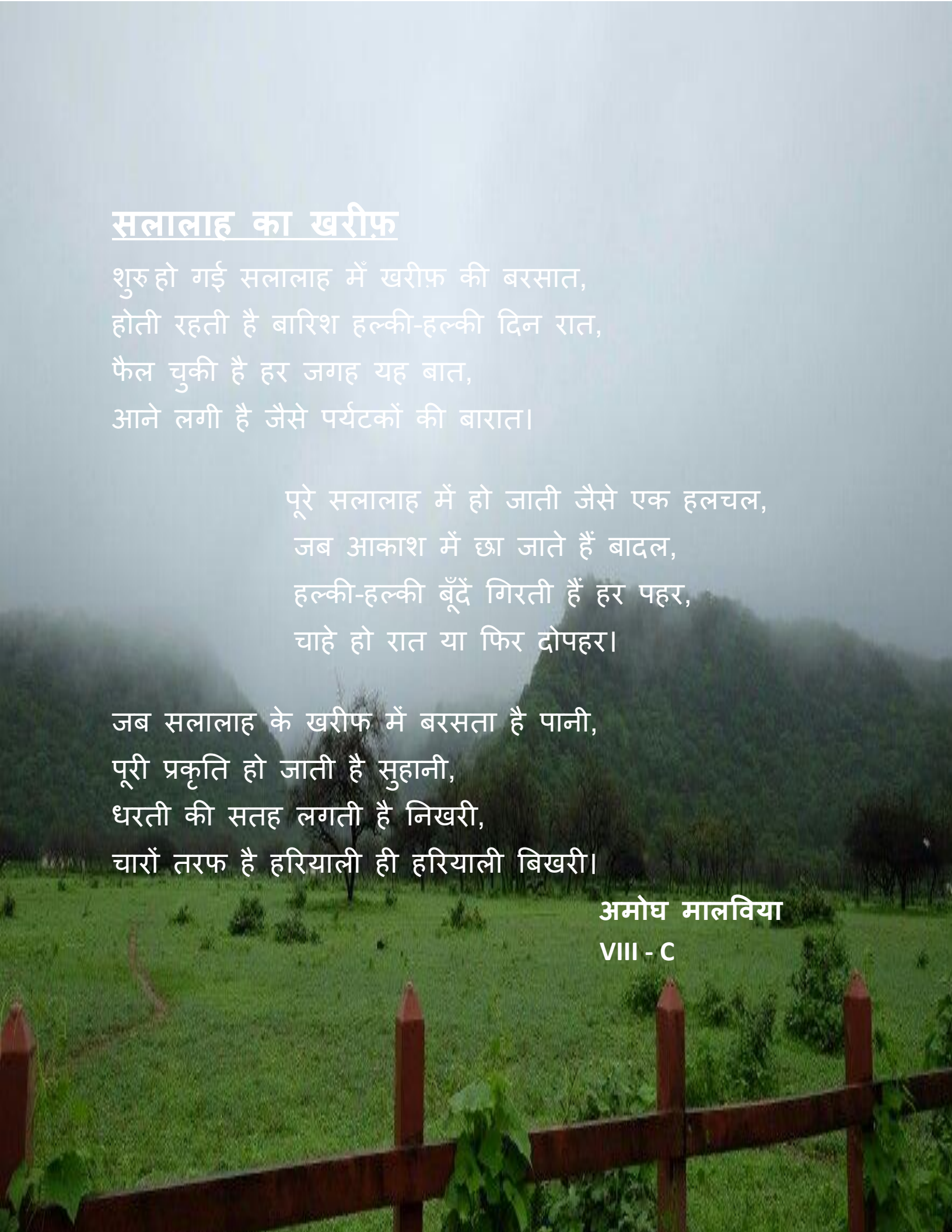

सलालाह का खरीफ़

शुरु हो गई सलालाह में खरीफ़ की बरसात,
होती रहती है बारिश हल्की-हल्की दिन रात,
फैल चुकी है हर जगह यह बात,
आने लगी है जैसे पर्यटकों की बारात।

पूरे सलालाह में हो जाती जैसे एक हलचल,
जब आकाश में छा जाते हैं बादल,
हल्की-हल्की बूँदें गिरती हैं हर पहर,
चाहे हो रात या फिर दोपहर।

जब सलालाह के खरीफ में बरसता है पानी,
पूरी प्रकृति हो जाती है सुहानी,
धरती की सतह लगती है निखरी,
चारों तरफ है हरियाली ही हरियाली बिखरी।

अमोघ मालविया
VIII - C

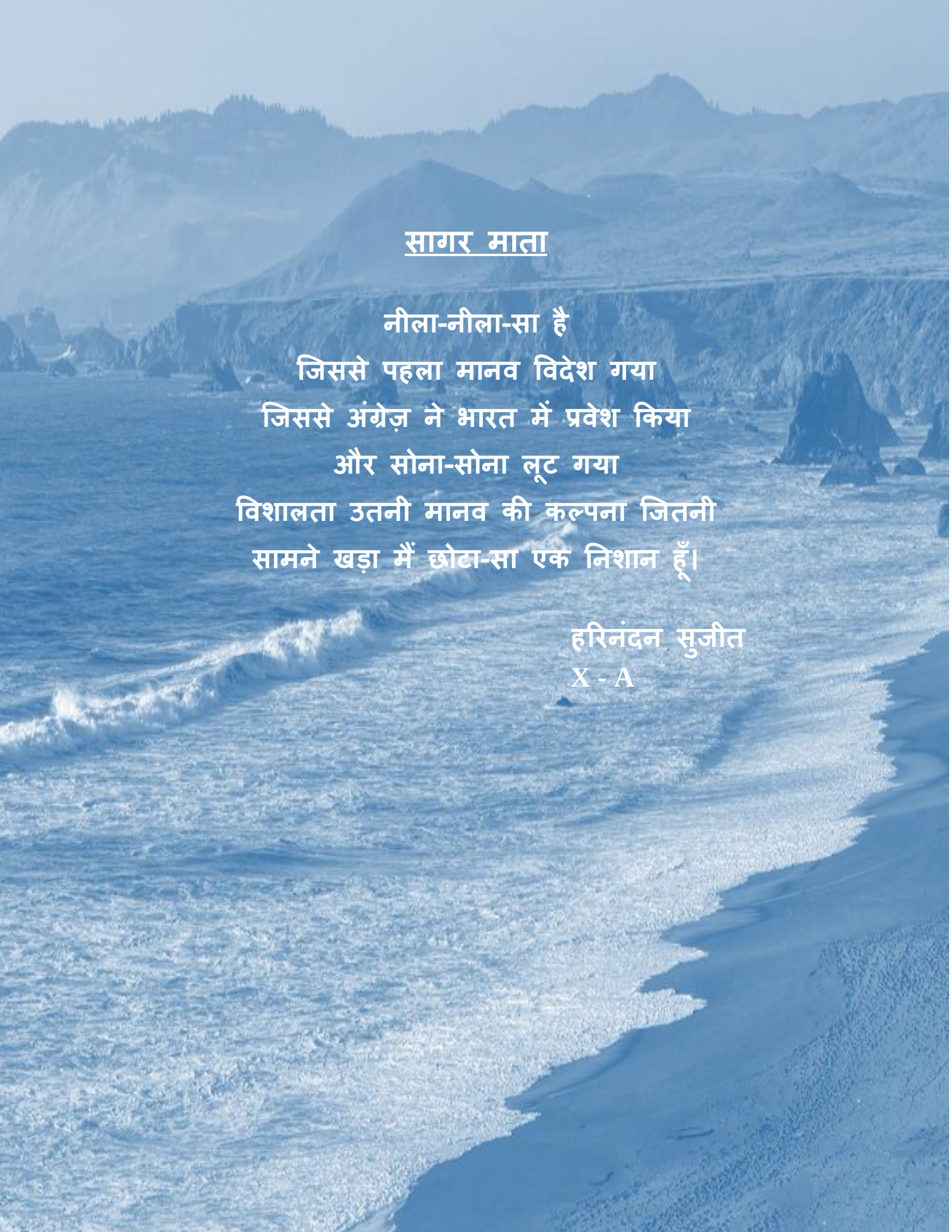

सागर माता

नीला-नीला-सा है
जिससे पहला मानव विदेश गया
जिससे अंग्रेज़ ने भारत में प्रवेश किया
और सोना-सोना लूट गया
विशालता उतनी मानव की कल्पना जितनी
सामने खड़ा मैं छोटा-सा एक निशान हूँ।

हरिनंदन सुजीत
X - A

बादल

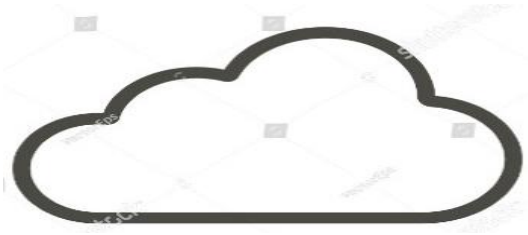

जल लेकर आए नभ में

देखो बादल भैया रे।

उमड़ - घुमड़कर शोर मचाते

करके ता - ता थैया रे।

भीगे आँगन बाग-बगीचे

भर गई ताल - तलैया रे।

पंख फैलाए मोर हैं नाचे,

फर - फर करै चिरैया रे।

ए. समीरा

IV-J

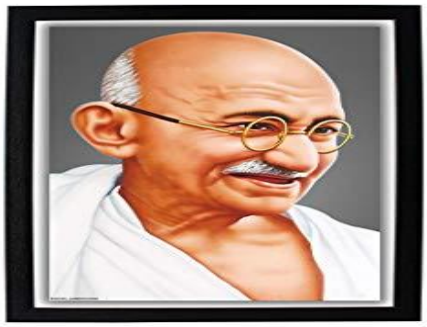

बापू

बच्चों को बापू प्यारे थे।

वह सारे जग के न्यारे थे।

अच्छी बातें सिखलाते थे।

सब को गले लगाते थे।

सत्य, अहिंसा परम धर्म हैं,

यह था उनका नारा।

जाति, धर्म से बढ़कर है,

यह भारत देश हमारा।

निहारिका

IV - J

मेरा प्यारा कीबोर्ड

मुझे बहुत प्यारा है, मेरा कीबोर्ड।

जब भी होता हूँ पढ़ाई और खेल-कूद से बोर।

और नहीं सुनना चाहता जब मैं सब शोर।

तो बजा लेता अपना कीबोर्ड।

जब भी मैं सुनता कीबोर्ड का संगीत,

ना जाने कहाँ जाता है मेरा समय बीत?

बजाकर कीबोर्ड पर कोई नया गीत,

सारी मुश्किलों से जाता हूँ जीत।

मुझे बहुत अच्छा लगता है कीबोर्ड बजाना।

सीखना कीबोर्ड पर कोई नया गाना।

भूल जाता हूँ मैं खेलना, पढ़ना और खाना।

बस चाहता हूँ मैं कीबोर्ड बजाना।

अर्णव मालविया

III - C

ज़िंदगी

यह ज़िदगी की कहानी है,

बहता हुआ-सा पानी है।

हर पल कुछ नया दिखाती है,

कभी खुशियाँ, कभी मायूसी दे जाती है।

भर कर अपने अंदर खुशी को,

हर गम से सिखाते चलो,

जो गिर गया तो क्या हुआ,

उठकर फिर आगे बढ़ते चलो।

जब काले घने अँधेरों में,

तुम ढूँढ लोगे रोशनी,

उस दिन हर गम हारेगा,

और जीतेगी बस खुशी,

यही है ज़िदगी की कहानी,

जो बहता हुआ-सा पानी है।

अमीना तोसीफ

VIII - B

मैं जिस दुनिया की तमन्ना करती हूँ

मैं खुशियों की दुनिया की तमन्ना करती हूँ, दुख की नहीं

मैं सुंदर दृष्टि की दुनिया की तमन्ना करती हूँ, डर की नहीं

इस दुनिया में दया का स्वाद होना चाहिए, लालच का नहीं

जाति, पंथ और धर्म में कोई अंतर होना नहीं चाहिए

लेकिन प्यार और स्नेह की दुनिया होनी चाहिए

मैं एक ऐसी दुनिया की तमन्ना करती हूँ

जहाँ हर कोई एकजुट हो

एक साथ शांति और खुशी की

एक सुंदर दुनिया का संचार हो।

सादिया खातुन

VIII - A

तारे

टिम टिम करते नन्हे तारे,

बताओ क्या, हो कितने सारे।

आसमान में चमके तारे

लगते कितने सुंदर और प्यारे।

छोटे-छोटे, नन्हे-नन्हे,

झिलमिल-झिलमिल करते तारे।

रात अँधेरी जब होती है,

राह दिखाते हैं ये चमकदार तारे।

टिम-टिम करते नन्हे तारे,

बताओ क्या, हो कितने सारे।

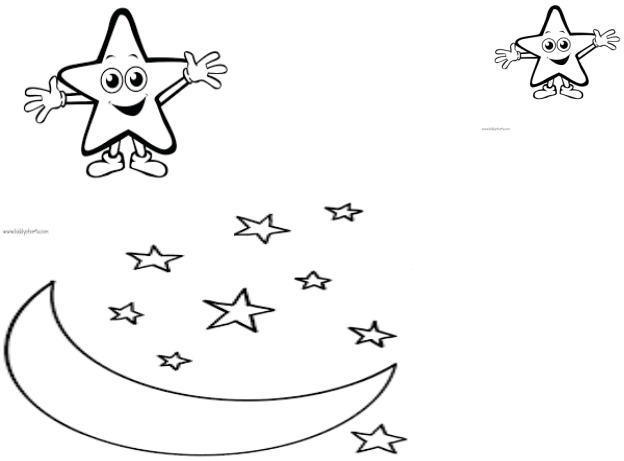

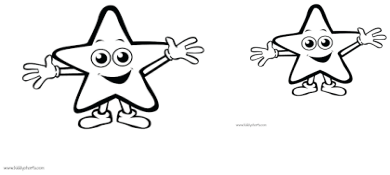

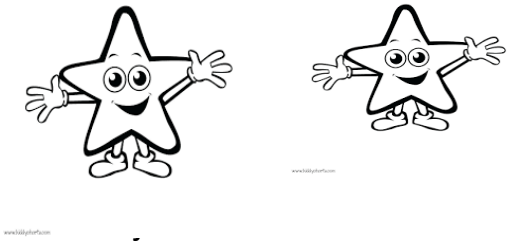

तेजस्विनी

VIII - C

बारिश

तड़-तड़ गरजते हैं घन,

बच्चे और बड़ों का झूम उठता है मन।

शर्माकर बैठा है सूर्य बादलों के पीछे,

छिपकर बैठा है आदमी छतरी के नीचे।

पर बच्चों का झुंड उछल पड़ा मद में,

एक-एक करके निकल पड़े खेलने बारिश में।

बारिश खेतों की जान है,

बारिश किसानों की मुसकान है।

बारिश पेड़-पौधों की रक्षक है,

बारिश हरियाली की रखवाली है।

बारिश सबके मन को भाती है,

हर एक की ज़िंदगी में सुकून देती है।

कभी-कभी यह प्रलयकर हो जाती है,

कभी-कभी हमारी दोस्त बन जाती है।

Aizer Zuleikha yaser

IV - C

सड़क

सड़क बनी है लंबी-चौड़ी

उसमें जाती मोटर दौड़ी

सब बच्चे पटरी पर आओ

बीच सड़क पर कभी न जाओ

जाओगे तो दब जाओगे

चोट लगेगी पछताओगे।

श्रीराम गोविंद

IV - F

<u>हिंदी दिवस</u>

इसमें देश की मिट्टी की खुशबू सी महकती है,

देश-प्रेम की भावना इससे और ज़्यादा निखरती है।

शब्द-शब्द में इसके जैसे एक सम्मान झलकता है,

वीर सपूतों की वाणी में इससे जोश उगलता है।

वीर रस, श्रृंगार रस सारे रसों की ताकत है

इंग्लिश जो भी बोलो हमें इसी की आदत है।

हम भारत के लाल सदा इसको अपनाते आए हैं,

बचपन से ही हमें राष्ट्र के लिए सिखाते आए हैं।

वर्णमाला सीखी है हमने बचपन के खेलों में,

कैसे भूले इसके दिन हम दुनिया के झमेलों में।

यह संस्कृति बनी हुई है यह आधार ज़रूरी है

इसमें अवरोध कई बने इसमें सुधार ज़रूरी है।

भारत माता के माथे की बिंदी है

राष्ट्रवाद के लिए ज़रूरी हिंदी है....

मोहम्मद अदनान

IV - I

बूँद बूँद को समेटकर

जैसे बूँद-बूँद को समेटकर
तालाब समुद्र बन जाता है
जैसे घर-घर को बसाकर
ग्राम शहर बन जाता है
वैसे इरादों-इरादों को जुटाकर
इनसान बन जाता है।

जैसे एक फूल की क्यारी
तपकर, दिवाकर के नभ पर
सुवास, सुगंध बिछाकर
गुलदस्ते में मिल जाती है,

जैसे स्याही की एक बूँद
कागज को रंगीन कर
अमिश्रित, अजमेल, अटल
शब्दों के बगीचे में बस जाती है,

जैसे एक पर्ण, वायु में लहराता
हरा, हल्का, लहलहाता
टहनियों की रज़ाई बनकर
बरगद के पेड़ को निखार जाता है,

वैसे ही एक विश्वास
अजय, अपराजित, सुस्थिर
मन के इरादों में घुलकर
हिम्मत का बीज बो जाता है।

ईंट-ईंट से मकान चाहे न बने
विश्वास-विश्वास से इरादा बन जाता है
बूँद-बूँद से सागर न बने
इरादों-इरादों से इनसान बन जाता है।

मानसी गरुरानी
XI - B

पहेलियाँ

अंत कटे तो सबका जीवन

मध्य कटे तो न्याय करुँ

उल्टा सीधा एक समान

एक पाँव पर खड़ा हूँ।

जलज

मुझे उलटकर देखो

लगता हूँ मैं वन जवान

कोई अलग न रहता मुझसे

बच्चा, बूढ़ा और जवान।

वायु

प्रथम कटे तो दिल बन जाए

मध्य कटे तो बात बताऊँ

शोभा देखो हर उपवन में

सुंदर दिखता हर एक रंग में।

सुमन

प्रथम हटाओ तो पिघल जाऊँ

अंत कटे तो युद्ध कराऊँ

पशु-पक्षी सब खूब बसाऊँ

बुझो तो मैं तुम्हें मान जाऊँ।

जंगल

फातिमा सज्जद तक्कर

XI - C

महिला सशस्त्रीकरण - लेख

हमारी भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का रूप माना जाता है। दुख की बात है कि इस कलयुग में हम महिलाओं की भूमिका और महत्त्व भूलते जा रहे हैं। आज की महिला घरेलू हिंसा, मज़दूरी, शोषण आदि के चक्रव्यूह में फंसकर छटपटा रही है। काफ़ी सारी तो शिक्षित होते हुए भी घर में कैद हैं। अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि देश का आधा ज्ञान तो घर पर ही बेकार पड़ा है। इन महिलाओं को इस परिस्थिति से बाहर निकालना हमारी ज़िम्मेदारी है। उनको अपने मौलिक अधिकार याद दिलाने होंगे। जो अशिक्षित हैं उन्हें शिक्षित कराना होगा। राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिराव फुले जैसे महान लोगों ने महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों पर आवाज़ उठाई और उन्हें अपने बल पर खड़े होने की हिम्मत दी। इन लोगों के प्रयत्न को सफल बनाना हमारे ही हाथों पर है। हम यह न भूलें कि देश की उन्नति, महिला की उन्नति के बिना संभव नहीं।

कंधे से कंधा मिलाकर, असमानता का साया हटाकर

महिलाएँ अब आगे आएँ, देश का नाम उज्ज्वल कराकर सम्मान बढ़ाएँ।

स्नेहा

XII - B

चंद्रयान 2 विक्रम लैंडर - सफलता की कहानी

20 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में रॉकेट ने गुरुत्वाकर्षण के विरूद्ध जाकर अंतरिक्ष में खोज करने की नींव रखी। इस क्षेत्र में पहली बड़ी उपलब्धि 1969 में नासा के चंद्रमा पर उतरने से आई। भारत भी कहाँ पिछड़ने वाला था। 1962 में सरकार ने डॉ. विक्रम साराभाई की अध्यक्षता में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति की स्थापना की जिसे हम **इसरो** के नाम से भी जानते हैं। **इसरो** ने हमेशा राष्ट्र की सेवा को अपना सर्वोच्च कर्तव्य माना तथा हाल ही में चंद्रयान-2 मिशन से इसे साबित भी किया। चंद्रयान-2 की लागत 150 मिलियन डालर थी जो कि **ऐवेंजर एंडगेम** की तुलना में भी कम है।

चंद्रयान-2 का लक्ष्य, चंद्रयान-1 की उपलब्धियों को एक कदम और आगे ले जाना था परंतु दुर्भाग्यवश 7 सितंबर को लैंडिग के अंतिम क्षणों में चंद्रमा की सतह से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर विक्रम लैंडर से संपर्क टूट गया। चूँकि यह मिशन 95% पूरा हो चुका था इसलिए यह इसरो और उनके वैज्ञानिकों के लिए अब बस थोड़ी ही दूर का सफर रह गया है। इसमें कोई शक नहीं कि **इसरो** अपनी सभी त्रुटियों पर विचार कर उन्हें सुधारेगा। **इसरो** की उपलब्धियाँ प्रशंसनीय है जो कि 1979 में पी.एस.एल.वी. थी। आज वह जी.एस.एल.वी. तक पहुँच गई हैं। **इसरो** हमेशा अपनी असफलताओं से सीखकर सफलता प्राप्त करने के लिए सराहनीय रहा है। हालाँकि चंद्रयान-2 मिस रह गया किंतु **इसरो** की बड़ी उपलब्धियों पर इसकी छाया नहीं पड़नी चाहिए।

दुनियाभर में भारत ही एकमात्र देश है जो अपने पहले ही मिशन में मंगल ग्रह पर सफलतापूर्वक पहुँच गया। मंगलयान को 2013 में लाँच किया गया था। पिछले हफ्ते ही मंगलयान ने मंगल की ऑरबिट में पाँच साल पूरे किए। यह इसरो के

लिए गर्व का क्षण था। इसरो के नाम एक ही मिशन में सबसे अधिक सेटेलाइट लाँच करने का भी रिकार्ड है। भले ही नासा की तुलना में इसरो के पास धन और संसाधन कम मात्रा में हो किंतु लगातार प्रभावशाली उपलब्धियों के साथ वह दुनिया में अपनी शक्ति को साबित कर रहा है। इसरो ने अपने अनुभव से बहुत कुछ सीखा है जो इसे भविष्य में और बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है।

मेरे इसरो भाइयों हताश मत होना

सफलता नज़दीक है निराश मत होना।

नमन वर्मा

XI - A